अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2012) | दिनांक 22.12.2012

छठा वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

गतागत – 40

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर लिखें – 24

(क) असंज्ञी मनुष्य में कितने व कौन–कौन से भेद पाते हैं?

(ख) संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आगति कितनी व कहाँ–कहाँ से है?

(ग) लवण समुद्र और द्यातकी खंड में जीव के कितने व कौन से भेद पाते हैं?

(घ) केवल ज्ञानी में आगति कितनी व कहाँ–कहाँ से है?

(ङ) अवधिज्ञान में गति कितनी व कहाँ–कहाँ से है?

(च) 51 जाति के देवों के नाम लिखते हुए उनकी गति लिखें।

(छ) दूसरी नरक में आगति कितनी व कहाँ–कहाँ से है?

(ज) छप्पन अन्तर्दीप के यौगलिक में गति व आगति कितनी व कौन–कौन सी है?

(झ) संज्ञी मनुष्य में गति व आगति कितनी व कौन–कौन सी है?

(ञ) विभंग अज्ञान में गति कितनी व कौन–कौन सी है?

प्र.2 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 16

(क) कृष्ण लेश्या वाले कृष्ण लेश्या में जाए तो आगति व गति कितनी तथा कहाँ–कहाँ से है?

(ख) मूल वैकिय शरीर में गति आगति कितनी व कौन–कौन सी पाती है?

(ग) तिर्यंच में कितने व कौन–कौन से भेद पाते हैं?

(घ) अवधि दर्शन में गति व आगति कितनी व कहाँ–कहाँ से है?

(ङ) कालोदधि, अर्धपुष्कर द्वीप, अधोलोक में जीव के कितने व कौन से भेद पाते हैं?

(च) नवमें देवलोक से सवार्थ सिद्ध में आगति व गति कितनी व कौन–कौन सी पाती है?

कायस्थिति – 40

प्र.3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर लिखें – 30

(क) नील लेश्यी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ख) क्षायिक सम्यक्त्वी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ग) तिर्यंचणी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(घ) सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेजस, वायु की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ङ) स्त्री वेदी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(च) संज्ञी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(छ) साकारोपयोग की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ज) परिहार विशुद्धि चारित्र की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(झ) विभंग ज्ञानी की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ञ) कायपरीत की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ट) पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ठ) छद्मस्थ आहारक की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति व जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

प्र.4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 10

(क) अपर्याप्त की जघन्य कायस्थिति कितनी है?

(ख) तिर्यंच की उत्कृष्ट कायस्थिति अनंत काल किस अपेक्षा से है?

(ग) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय की जघन्य उत्कृष्ट काय स्थिति कितनी है?

(घ) कापोतलेश्यी की उत्कृष्ट कायस्थिति 3 सागर, पल्य का असंख्यातवां भाग किस अपेक्षा से है?

(ङ) त्रस की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?

(च) मनः पर्यव ज्ञानी की उत्कृष्ट कायस्थिति कितनी है?

(छ) संसार परीत कौन कहलाता है?

(ज) सयोगी की जघन्य कायस्थिति अनादि अनंत क्यों कही गई है?

(झ) संयतासंयति की जघन्य कास्थिति अन्तुमुर्हुर्त्त किस अपेक्षा से है?

(ञ) चक्षुदर्शनी का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर लिखें।

(ट) देवता और नारक की भवस्थिति ही कायस्थिति है, क्यों?

गीतिका (पांचोंवर्ष की) – 20

प्र.5 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) ''खपक श्रेण में.....जाचो रे'' पूरा पद्य अर्थ सहित लिखें।

(ख) ''सचित्तादिक द्रव्य.....दान ए'' पूरा पद्य अर्थ सहित लिखें।

(ग) ''सहस्रकिरण सूर्य.....जावे घटतो रे'' पूरा पद्य अर्थ सहित लिखें।

(घ) ''संम्पराय में पुन्य.....म पेखो रे'' पूरा पद्य अर्थ सहित लिखें।

(ङ) ''सांभल न्याय.....काली जोय'' पूरा पद्य अर्थ सहित लिखें।

प्र.6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) गर्वदान किसे कहते हैं? यह किन अवसरों पर दिया जाता है?

(ख) ईर्यापथिक बंध किन गुणस्थानों में होता है? उसकी स्थिति कितनी है?

(ग) सम्यक्त्व पाये बिना जीव नौ ग्रैवेयक तक कैसे जा सकता है? पद्य भी लिखें।

(घ) व्रत तथा अव्रत को किस दृष्टांत से समझाया गया है?

(ङ) गुणस्थान दिग्दर्शन गीत की रचना कब, कहाँ हुई? उस समय संघ में कितने साधु साध्वी थे?

(च) कौन–कौन से सबल व्यक्ति भी कर्मों के आगे निर्बल हो जाते हैं?

(छ) श्रावक को शुद्ध भोजन खिलाना क्या है? इसका उल्लेख किस सूत्र में किया गया है?